International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
www.hindijournal.com
Volume 1; Issue 1; November 2015; Page No. 46-49

आधुनिक ब्रजभाषा काव्य की परम्परा में देवशर्मा बाजपेयी कृत 'ब्रजमाधुरी' का विशेष अध्ययन

प्रीति
हिन्दी विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र में सीतापुर जनपद (उ0प्र0) के आधुनिक कालीन ब्रजभाषा के कवियों का विवेचन करते हुए श्री देवशर्मा बाजपेयी प्रणीत 'ब्रज माधुरी' शीर्षक कृति के वैशिष्ट्य का उद्घादन किया गया है। 'ब्रज माधुरी' में श्री कृष्ण की बाल्यावस्था से लेकर उनके मथुरा जाने तक की विविध–लीलाओं – बाल सौन्दर्य , राधा–कृष्ण की रास–लीला, कृष्ण के मथुरागमन, कृष्ण द्वारा गोपियों को सन्देश देने हेतु उद्धव को भेजने , उद्धव–गोपी–संवाद तथा निर्गुण पर सगुण की विजय का सुन्दर निरूपण है। भाव–व्यंजना विविधरसों के परिपाक के साथ ही विविध छन्दों के सुन्दर संयोजन से काव्य अपूर्व बन गया है। कवि की मौलिक उद्भावनाओं तथा भक्ति तत्त्व के प्रतिपादन से काव्य की उपदेयता द्विगुणित हो गयी है।

मूल शब्दः ब्रजभाषा, ब्रजमाधुरी, राधा, कृष्ण, निर्गुण, सगुण।

प्रस्तावना
''वैदिक साहित्य में ब्रज शब्द का प्रयोग पशुओं के समूह की गोचर भूमि या फिर पशुओं के बाँधने के बाड़े के अर्थ में किया गया, यह शब्द जनपद वाचक है। पहले ब्रज प्रदेश को मथुरा या सूरसेन के नाम से जाना जाता था, परन्तु श्री कृष्ण के समय में ब्रज एक निश्चित भू–भाग था। 'ब्रज' शब्द भाषा के साथ में जुड़ कर अपनी परम्परा को बनाता है।''
डॉ0 सत्येन्द्र ब्रजभाषा के स्वरूप को प्रकट करते हुए कहते हैं कि ''ईस्वी 1000 के लगभग की ब्रजभाषा शौरसेनी अपभ्रंश की गोद में खेलती हुई बालिका के समान है। ईस्वी 1400 के लगभग ब्रजभाषा अपभ्रंश की उँगली पकड़कर चल रही है और सूरदास के समय की ब्रजभाषा पूर्णतः अपने पैरों पर खड़ी है तथा दूसरी भाषाओं को प्रभावित करने वाली है।''

> ''विक्रम की 16वीं सदी से 18वीं सदी तक ब्रजभाषा सम्पूर्ण उत्तरापथ की काव्य भाषा के रूप में ग्रहीत हुई।''

आधुनिक ब्रजभाषा काव्य
आधुनिक युग में काव्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा का प्रभुत्व वैसा ही बना रहा, जैसे पूर्व के युग में था। यद्यपि खड़ी बोली धीरे–धीरे काव्य के क्षेत्र की ओर बढ़ रही थी, परन्तु ब्रजभाषा का अपना अलग ही स्थान रहा। आधुनिक समय में ब्रजभाषा काव्य के दो रूप मिलते हैं। पहला उन कवियों का जो ब्रजभाषा की प्राचीन परम्परा का अनुसरण करते हुए भक्ति एवं श्रृंगार से युक्त काव्य की रचना कर रहे थे। दूसरे उन कवियों का जो ब्रजभाषा की प्राचीन रूढ़ियों को तोड़ कर उसे नये युग की भावनाओं की अभिव्यक्ति में समर्थ बना रहे थे।
आधुनिक काल में प्राचीन परम्परा का अनुसरण करते हुए गढ़वाल के प्रसिद्ध रचनाकार 'भोलाराम' ने सर्वप्रथम 'गढ़ राजवंश' की रचना ब्रजभाषा में की। इसी युग में सरदार कवि ने 'साहित्य सरसी', 'वाग्बिलास' तथा 'षटऋतु' आदि रचनाओं को प्रस्तुत किया। लक्षराम ब्रह्म भट्ट ने 'मानसिंहाष्टक' 'प्रताप रत्नाकर' तथा 'प्रेम रत्नाकार' आदि लोकप्रिय काव्यों की रचना की। इस काल में जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' जी के 'उद्धव शतक' को विशेष ख्याति प्राप्त हुई।
ब्रजभाषा के जिन कवियों ने न केवल रीतिकाल में प्रचलित परम्परा को आगे बढ़ाया, अपितु हिन्दी साहित्य को नयी दिशा भी दिखायी, साथ ही पुरानी परिपाटी से भी अपने सम्बन्ध को बनाये रखाउसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं0 प्रताप नारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास तथा ठाकुर जगमोहन सिंह प्रमुख हैं।
आधुनिक समय में ब्रजभाषा की इस परम्परा को सीतापुर जनपद के जिन कवियों ने आगे बढ़ाया, उनका विवरण निम्नवत् है –

श्री अनूप शर्मा
आपकी रचनाओं में 'सिद्वार्थ', 'फेरि मिलिबो', 'कुणाल, वर्द्धमान', सुमनांजलि, शर्वाणी प्रमुख हैं। आप द्विवेदी युग के प्रसिद्व कवि थे। आपको अपने समय के हिंदी के प्रसिद्व 'देव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था।

श्री नन्द किशोर मिश्र 'लेखराज'
आपने ब्रज भाषा में मुक्तक काव्य छन्दों के साथ–साथ 'गंगाभरण' तथा 'रस रत्नाकार' जैसे महान ग्रन्थ हिन्दी काव्य रसिकों को प्रदान किया। 'रस रत्नाकर' से एक छन्द निम्नवत है–

करि अंजन मंजन गंजन को, मृग कंजन खंजन औ भखियाँ।
पल कोट की ओट बचाय कै चोट, अंगोट सबै सुख में रखियाँ।
'लेखराज' कहै अभिलाख लषाय के, लाखन पूरे करीं सखियाँ।
तेई हाय! विहाय हमैं जरि जाय, ये जी को जंजाल भईं अंखियाँ।

श्री कृष्ण बिहारी मिश्र
आपने हिन्दी की विविध विधाओं में सेवा की। आप गद्य में समालोचना के लिए प्रसिद्ध हैं। आप ब्रजभाषा के अनन्य भक्त थे। आपने ब्रजभाषा में मुख्यतः स्फुट पद मुक्तक काव्य के रूप में लिखा है, जो समय–समय पर 'सरस्वती' तथा 'माधुरी' पत्रिका में प्रकाशित होते थे।

श्री उमादत्त सारस्वत
ब्रजभाषा में आपने मुक्तक छन्दों की रचना की। अंग्रेजी भाषा पर आक्रोश प्रकट करता हुआ आपका एक छन्द इस प्रकार है–

रावन सहसबाहु कंस सिसुपाल हूं कौ,
जानत जहान पूरो भयो जस अन्त है।
'गोरी गौरमेण्ट' कौ बिनास हूं बताय रह्यो,
पापी दुराचारिन कै होत कस अन्त है।

धीरे–धीरे बढ़ि जौने हद्दसों अधिक जाति,
धीरे–धीरे एक दिन होत तस अन्त है।
चलति न कागद कै नाव है बहुत दिन,
भाषा अंगरेजी हूं कौ आयौ तस अन्त है।

आचार्य बाबूराम त्रिवेदी 'अखिलेश'

ब्रज भाषा में आपकी स्फुट मुक्तक रचनाएं तथा प्रबन्धात्मक रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

ब्रजभाषा काव्य में आपने 'मधुबन' तथा 'दयानन्द लहरी' नामक काव्य की रचना की।मधुवन काव्य में आप एक स्थान पर मुक्तक छन्द द्वारा अपने भावों को इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

मुक्तान की माल मनोहर लाय, किरातन को पहिराइए ना।
बलि बर्द के आगे पुरानन की, चरचा कबौं भूलि चलाइए ना।
तिय बाँझके आगे प्रसव की कथा, 'अखिलेश' कबौं बतराइए ना।
सठ जानै न जे रस भाव तिन्हैं, कवितामृत पान कराइए ना।

श्रीकान्त शर्मा 'कान्ह जी'

आपने खड़ी बोली, अवधी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में रचनाएं कीं। आपने ब्रजभाषा में मुक्तक छन्दों की रचना की, जो लखनऊ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'रसवन्ती' में छपते थे। आपके छन्द 'रसवन्ती' के अतिरिक्त अन्य पत्र–पत्रिकाओं में भी समय–समय पर प्रकाशित होते रहे हैं।

आदित्य प्रकाश अवस्थी 'दिनेश दादा'–

आपने अवधी, खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा तीनों में काव्य का सृजन किया। आप ब्रजभाषा के परम प्रेमी हैं। अतः आपने ब्रजभाषा में 'सावन' 'पति–भक्ति' तथा 'कान्ह वियोग' नामक काव्य संग्रहों की रचना की। 'कान्ह–वियोग' आपका श्रेष्ठ काव्य संग्रह है, जिसमें आपने राधा तथा गोपियों का कृष्ण के प्रति प्रेम का मार्मिक वर्णन किया है।

देवशर्मा बाजपेयी जी का सर्जनात्मक ब्रज काव्य 'ब्रज माधुरी'

आधुनिक युग की ब्रज काव्य परम्परा के अनुरूप ही आपने अपने काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। 'ब्रज माधुरी' बाजपेयी जी के सर्जनात्मक ब्रज काव्य का संकलन है, जिसका प्रकाशन सन् 2002 ई0 में लखनऊ की प्रतिष्ठित साहित्य संस्था वागीश्वरी साहित्य परिषद के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ। 76 पृष्ठों के इस ग्रन्थ में 108 छन्द तथा 6 वन्दना विषयक छन्द हैं। ''ब्रज माधुरी'' कृष्ण और राधा की विविध लीलाओं से युक्त मुक्तक काव्य है, जिसमें बाजपेयी जी ने अपनी तूलिका से सुन्दर चित्र संवारे हैं। विद्वानों ने उसकी अत्यधिक प्रशंसा की है।

डॉ0 गणेश दत्त सारस्वत (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आर0एम0पी0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय–सीतापुर) ने ''ब्रज माधुरी'' की सम्मति में लिखा है कि– ''देव शर्मा बाजपेयी ने पारम्परिक छन्दों की प्रकृति को अधिकांशतः आत्मसात किया है। इसलिए उनका छन्द–विधान सौष्ठवपूर्ण है। उनके छन्दों में भगवद्विषयक रति का अच्छा परिपाक् है। राधा–कृष्ण के परम्परागत कथ्य को चारुता प्रदान करने में उन्हें जो अपेक्षित सफलता मिली है, उसका मूल कारण उनकी अभिव्यंजन–ऋजुता है। कुल मिलाकर बाजपेयी जी का यह काव्य–संकलन सर्वथा स्वागत योग्य है। इससे यह धारणा पुष्ट हुए बिना नहीं रहती कि भविष्य में भी श्री बाजपेयी जी से और अधिक उत्कृष्ट रचनाएँ हिन्दी जगत को प्राप्त होंगी।''[1]

भक्ति का सम्बन्ध उपासना पद्धति से है। कविवर बाजपेयी जी ने अपने भक्ति भावों को सूर, तुलसी तथा मीरा आदि भक्त कवियों की तरह गेय पदों में अभिव्यक्त किया है। इन पदों में राधा–कृष्ण तथा गोपियों का एक दूसरे के प्रति प्रेम व्यक्त किया गया है, किन्तु यह प्रेम साधारण कोटि का नहीं है। इसमें उस प्रेम किंवा अनुरक्ति का सच्चा स्वरूप प्रदर्शित किया गया है, जो भक्ति की कोटि में आ जाता है।

आपने 'ब्रजमाधुरी' को वाणी वन्दना तथा विनायक वन्दना से प्रस्तुत करते हुए अपने भावों को गति प्रदान की है। सर्वप्रथम आपने दास्य भाव से भगवान के लोकरंजक स्वरूप के प्रति अपने अन्तः ह्रदय के भावों को व्यक्त किया है।

कृष्ण की शक्ति रूपा राधा के प्रति अपनी भक्ति–भावना से ओत–प्रोत मनोभावों को व्यक्त करते हुए कविवर बाजपेयी जी लिखते हैं–

शक्ति साधना कै अनुरक्ति भक्ति भावना कै,

ब्रह्म कै स्वरूप कै अजस्र सिद्धि साधा के।
भोरी वृषभानु सुता सुमुखि सुलोचनी वा,
कीरति कुमारी कल कीरति अगाधा के।
संकट निवारनि सँवारनि सकल काज,
वारनि अशेष दुख द्वन्द्व भव–बाधा के।
प्रात उठि ध्यावौ, नित्य गुनगन गावौं,
पद कमल मनावौं जगदम्ब अम्ब राधा के।

बाजपेयी जी का कृष्ण बाल–वर्णन बाल्यावस्था की चित्ताकर्षक झांकियाँ प्रस्तुत करता है। बाल जीवन की प्रत्येक भावना का जो सूक्ष्म और स्वाभाविक चित्रण कृतिकार ने प्रस्तुत किया है, वह मौलिकता का द्योतक है। आपने कृष्ण के बाल जीवन की विविध अवस्थाओं के बड़े ही सुन्दर बिम्ब उभारे हैं। कृष्ण का अनुपम सौन्दर्य वर्णन, घुटुअन चलना, मक्खन खाना तथा तुतलाकर बात करना, अपने आप नाचना आदि जितने बाल–मनोभावों के चित्र आपने अपनी इस रचना से दर्शाये हैं, वह अपूर्व हैं।

कृष्ण जी अपने बड़े–बड़े नेत्रों तथा घुंघराले बालों के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत पद इन्हीं भावों को व्यक्त करता है–

नैन कजरारे गभुवारे घुँघरारे केश,
राजत सुकिंकिणी उछंग करिहैयाँ पै,
वारौं शत कोटि सुषमा कौ पुंज साँवरे,
सलोने नटनागर कै लोनी लरिकैयाँ पै।
तात को रिझाइबे कौ भरि किलकारी धाइ,
ठुमकि–ठुमकि कैपरानि टैंयाँ–टैंयाँ पै,
डोलत दिवानी नन्दरानी ब्रज बल्लभ कै,
पीत पटवारे कै बिकानी बैयां–बैयां पै।

राधा एवं कृष्ण के प्रेम की लीलाओं का वर्णन नया नहीं है। प्राकृत, अपभ्रंश तथा मध्य युगीन कवियों ने भी राधा तथा कृष्ण के प्रेम–सौन्दर्य का चित्रण श्रृंगारिक आधार पर किया था। उसी परिपाटी का अनुसरण करते हुए आपने श्रृंगारमय भक्ति का विस्तार किया है।

राधा एवं कृष्ण का प्रेम बड़ी ही स्वाभाविक परिस्थितियों में विकसित हुआ। एक दिन एक स्थान पर श्याम चकरी–भौंरा खेल रहे थे। वहीं पर उन्हें प्रथम बार राधा के दर्शन हुए। वह भी अपनी सखियों के साथ खेलने आयी थीं। राधा जी नीले रंग के वस्त्र पहने थीं तथा स्वयं गौर वर्ण की थीं, इसलिए उन्हें देखते ही कृष्ण उन पर मोहित हो जाते हैं। दूसरी तरफ कृष्ण की छवि ने भी राधा को अपने आकर्षणपाश में आबद्ध कर लिया।

आई हुती खेलन सहित सखियान संग,
डीठि एक ही मैं छलिया के नाम ह्वै गई।
बेनु मधुरामृत रसीली तान मै नहाय,
कीरति कुमारी माधुरी ललाम ह्वै गई।
कान्ह कौ निहारि लाज सों सिहाय मुसुकाइ,
नेह कौ अनूठो बिम्ब अभिराम ह्वै गई।

ऐती सराबोर भई रंग साँवरे मैं ''देव'',
गोरी–गोरी राधिका सलोनी श्याम ह्वै गई।

जिस मोहक छवि ने वन, उपवन, सरिता तथा जड़ वस्तुओं तक को मुग्ध कर दिया, वह चेतना कोमल, स्वरों से झंकृत गोपियों के ह्रदय को बिना मुग्ध किये कैसे रह सकती थी। गोपिकायें कृष्ण की मनमोहनी मूर्ति देखकर उनके प्रेम में मग्न हो जाती है। कृष्ण के प्रति गोपिकाओं का यह प्रेम परकीया प्रेम के अन्तर्गत आता है। सूर के आध्यात्मिक पदों के अनुसार– ''कृष्ण की मुरली रूपी योग माया के स्वर में बिधी हुई आत्मा रूपी सोलह हजार गोपिकाओं के मध्य एक कृष्ण उसी प्रकार रासलीला करते हैं जैसे असंख्य आत्माओं के मध्य एक ब्रह्म।''
गोपियों के मन में श्री कृष्ण के प्रति बड़ा आकर्षण है। वे चाहती हैं कि वे मर्यादा के बन्धन को मानें परन्तु वे विवश हो जाती हैं। वे कृष्ण के प्रति अपने प्रेम की प्रबलता को किसी भी रूप में छिपा नहीं पाती हैं, क्योंकि जब श्री कृष्ण बाँसुरी बजाते हैं, तो गोपिकाएं सुध–बुध भूलकर, मर्यादा के बन्धनों को तोड़कर कृष्ण के पास पहुँच जाती हैं। बाजपेयी जी ने इस विषम परन्तु आनन्ददायक परिस्थिति का अन्यन्त सहृदयता तथा भावुकता से भरा हुआ वर्णन किया है–

आली नन्दलाल कौ सलोनो साँवरो सरूपु,
मोहिनी सी डारि बरसावति बिजुरिया।
बावरी सी व्याकुल बिहाल ब्रजबालन कै,
लूटि–लूटि लेत लोकलाज कै अंजुरिया।
झूमि–झूमि थिरकि नचाई नैन बेरि–बेरि,
नासा–पुट फरकाइ फेरत अंगुरिया।
काह धौं करैगी, विष कब लौ भरैगी हाय,
ब्रज मैं निगोड़ी घनश्याम कै बंसुरिया।।

प्रस्तुत काव्य संग्रह में बाजपेयी जी ने जितनी निपुणता के साथ संयोग का वर्णन किया है, उतनी ही दक्षता एवं निपुणता के साथ ब्रजवासियों की विरह दशा के भी मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किये हैं।
कृष्ण के अक्रूर के साथ मथुरा चले जाने पर ब्रज भूमि पर रहने वाले सभी प्राणी विरह में व्याकुल हो उठते हैं। कृष्ण के वियोग में तो ब्रज की समस्त श्री, सकल शोभा समाप्त हो जाती है। जड़ और जगत, चेतन और अचेतन, पशु और मानव सभी विकल और विह्वल हो रहे हैं।
बालक श्री कृष्ण के प्रति माँ के ह्रदय में कितना प्रेम भाव है, यह कोई विकल यशोदा से पूछे। कृष्ण के चले जाने पर यशोदा की क्या दशा थी, उनकी इस विरह में व्याकुल मनोदशा की तथा देवकी को यशोदा द्वारा भिजवाये गये संदेश को व्यंजित करते हुए बाजपेयी जी लिखते हैं–

ऊधौ भली भाँति देवकी सों समुझाइ दीजो,
मातु श्याम की वै श्याम उनकोई छैया है।
हौं तो धाय जान्यो पालिबो औ दुलराइबोई,
नैकु पयपान हूं करायो जिमि मैया है।
जब सो पठायो मथुरा कौ हौं विहाल अति,
सूनी परी वाके बिनु मोरी अँगनैया है।
कोउ भरि नैन जो निहारै तौ बरजि दीजो,
बारो डीठि वारो मेरो कुँवर कन्हैया है।

प्रेम का वास्तविक परिचय तो वियोगावस्था में होता है। प्रेम रूपी स्वर्ण का खरा या खोटा होना वियोग की कसौटी पर कसने से ही मालूम होता है। राधा की तो विरह वेदना का वर्णन ही नहीं किया जा सकता। कृष्ण के वियोग में राधा की दशा आत्मविस्मृत सी हो गयी है। उनके नेत्रों से निरन्तर अश्रु प्रवाहित होते रहते हैं। वह कृष्ण को याद कर बावरी–सी होकर अपनी सुध–बुध भी भूल जाती है। राधा की ऐसी स्थिति देखकर एक सखी दूसरी सखी से कह उठती है–

नाहक नेह लगाइ कै श्याम सों,
प्रेम की बेलि हिये मह बोई।
बावरी ऐसी भई पुनि बाँसुरी,
कै धुनि पै सुधि औ बुधि खोई।
कान्ह गये जब सों नहि रंचहु।
चैन परै निशि हूं नहिं सोई।
साँवरी सूरति कै सुधि कै हँसी,
राधिका औ फिरि फूटि कै रोई।

श्री कृष्ण जब उद्धव को गोपियों को निर्गुण निराकार ब्रह्म का ज्ञान देने के लिए गोकुल भेजते हैं, तो उनका अभिप्राय यह था कि वे गोपियों की प्रीति, गूढ़ता और तन्मयता देखकर शिक्षा ग्रहण कर सकें और सगुण–भक्ति–मार्ग के सामने उनका गर्व दूर हो सके, क्योंकि उद्धव को अपने निर्गुण ज्ञान का बड़ा गर्व था, प्रेम या भक्ति मार्ग की वह उपेक्षा करते थे।
श्री कृष्ण के कहने पर जब उद्धव गोकुल जाने के लिए तैयार होते हैं, तो कृष्ण उन्हें समझाते हैं कि वहाँ जाकर पहले तुम नन्द बाबा और यशोदा माता को धीरज बँधाना, फिर ग्वाल–बालों को समझाना तथा विरह से व्याकुल गोपियों को लोक–परलोक के बारे में बताना। कृष्ण के द्वारा कहे गये इन वचनों को बाजपेयी जी ने अपने काव्य संग्रह में बड़े ही सुन्दर ढंग से व्यंजित किया है–

गोकुल मै जाई ग्वाल बालन कौ समुझाइ,
नन्द औ जसोमति को धीरज बँधाइयो।
व्याकुल विहाल बिरहागि दही ब्रजबाल,
कीरति कुमारिका कै विपिन बराइयो।

जोग–भोग राग औ विराग लोक–परलोक,
हूं कौ भेद विविध विधान बतराइयो।
मोह तम तोम विनसाइ ब्रज मण्डल कौ
ज्ञान कौ उदोत गैल–गैल बगराइयो।

गोपियों को उद्धव द्वारा ज्ञान का उपदेश देना अच्छा नहीं लगता है। इसलिये जब उद्धव गोपियों को ज्ञान का उपदेश देते हैं, तो उन पर उस उपदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। वह उद्धव पर खीझ उठती हैं और खीझ कर कहने लगती हैं –

हमको भरोस तौ हमारे मनोहर कौ,
जा कौ गुनगाथ निसि वासर बखानै हम।
सोई पारब्रह्म जगदीस जाकी प्रभुता कौ,
देखै, सुनै, जानै भली–भाँति पहिचानै हम।
ऊधौ ब्रह्म रावरो महान सर्व शक्तिमान,
तौहू बिना देखे भला कैसे धीति मानै हम।
कान्ह जो हमारे रोम–रोम मैं समानो ताहि,
कोऊ ठेलि मथुरा पठावै ताहि जानै हम।

गोपियों को निर्गुण ब्रह्म 'नन्द नन्दन' के सामने तुच्छ प्रतीत होता है। गोपिकाएँ अनेक प्रकार से निर्गुण ब्रह्म की असारता और सगुण ब्रह्म की महत्ता सिद्ध करती हैं।
गोपिकाओं के ह्रदय में कृष्ण के प्रति इस तरह का अद्भुत प्रेम और श्रद्धा देख कर उद्धव आश्चर्यचकित हो जाते हैं। वह निर्गुण निराकार ब्रह्म को भूल कर पुनः कृष्ण के पास मथुरा आने लगते हैं। तब गोपियाँ श्री कृष्ण के लिये संदेश देती हुई उद्धव से कहती हैं –

कहियो हरि सों ब्रज कौ ब्रजबाल,
गुपालन कौ बिसराइ हैं ना।
धरि शीश किरीट सुकंचन कौं,
पुनि गोकुल गैल भुलाइहै ना।
तन सों दुरि जाँय भले पै कबौं,
मन सो हमको बिलगाइहैं ना।
हम हेरिहैं बाट इतै जब लौं फिरिकैं,
ब्रज बल्लभ आइहैं ना।

कविवर बाजपेयी जी ने ब्रज माधुरी 'काव्य संग्रह' में राधा–कृष्ण और गोपियों की भिन्न–भिन्न लीलाओं के साथ–साथ श्रृंगार के संयोग तथा वियोग दोनों पक्षों की अनूठी व्यंजना की है। उनका काव्य 'ब्रज माधुरी' ब्रजभाषा के कृष्ण काव्य परम्परा को समृद्ध बनाता है। भक्ति–भाव से परिपूर्ण यह ग्रन्थ इन्हीं सन्दर्भों में उपादेय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अवधी काव्यधारा – डॉ0 श्यामसुन्दर मिश्र'मधुप'
2. ब्रज माधुरी – देव शर्मा बाजपेयी
3. सारस्वत–सर्वस्व – डॉ0 गणेशदत्त सारस्वत।
4. सीतापुर जनपद के कुछ हिन्दी–गद्य साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय – नेतराम आर्य।
5. सुजान (त्रैमासिक पत्रिका–षष्ठम् अंक) – सुजान साहित्य परिषद–सीतापुर ।
6. सुजान (त्रैमासिक पत्रिका–पंचम अंक) – सुजान साहित्य परिषद–सीतापुर ।
7. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ0 जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल